



सम्पूर्ण आरती संग्रह

(हिंदी)



अस्वीकरण

All the information on this is published in good faith and for general information purpose only. Ritual Bazaar does not make any warranties about the completeness, reliability and accuracy of this information.





ॐ श्री गणेशाय नमः

प्रारंभी विनंती करू गणपित विद्यादया सागरा। अज्ञानत्व हरोनी बुद्धी मती दे आराध्य मोरेश्वरा || चिंता क्लेश दरिद्र दुःख अवघे देशांतरा पाठवी | हेरंबा गणनायका गजमुखा भक्तां बहु तोषवी || १ ||



गणपती आरती

जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥

> एक दंत दयावंत, चार भुजा धारी। माथे सिंदूर सोहे, मूसे की सवारी॥

जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥



पान चढ़े फल चढ़े, और चढ़े मेवा। लड्डुअन का भोग लगे, संत करें सेवा॥

जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥

अंधन को आंख देत, कोढ़िन को काया। बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया॥

जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥



'सूर' श्याम शरण आए, सफल कीजे सेवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥

जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥



ॐ जय जगदीश हरे आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे। भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट, क्षण में दूर करे॥ ॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिनसे मन का, स्वामी दुःख बिनसे मन का। सुख सम्पति घर आवे, सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का॥ ॥ ॐ जय जगदीश हरे.॥



मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी, स्वामी शरण गहूं मैं किसकी। तुम बिन और न दूजा, तुम बिन और न दूजा, आस करूं मैं जिसकी॥ ॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी, स्वामी तुम अन्तर्यामी। पारब्रह्म परमेश्वर, पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी॥ ॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥



तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता, स्वामी तुम पालनकर्ता। मैं मूरख फलकामी, मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता॥ ॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति, स्वामी सबके प्राणपति। किस विधि मिलूं दयामय, किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति॥ ॥ ॐ जय जगदीश हरे.॥



दीन-बन्धु दुःख-हर्ता, ठाकुर तुम मेरे, स्वामी रक्षक तुम मेरे। अपने हाथ उठाओ, अपने शरण लगाओ, द्वार पड़ा तेरे॥ ॥ ॐ जय जगदीश हरे..॥

विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा, स्वमी पाप(कष्ट) हरो देवा। श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा॥ ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।

> भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट, क्षण में दूर करे ॥



श्री गोवर्धन महाराज की आरती

श्री गोवर्धन महाराज, ओ महाराज, तेरे माथे मुकुट विराज रहेओ। ॥ श्री गोवर्धन महाराज...॥

तोपे पान चढ़े, तोपे फूल चढ़े, तोपे चढ़े दूध की धार। ॥ श्री गोवर्धन महाराज...॥

तेरे गले में कंठा साज रेहेओ, ठोड़ी पे हीरा लाल। ॥ श्री गोवर्धन महाराज...॥

तेरे कानन कुंडल चमक रहेओ, तेरी झांकी बनी विशाल। ॥ श्री गोवर्धन महाराज...॥



तेरी सात कोस की परिकम्मा, चकलेश्वर है विश्राम।

श्री गोवर्धन महाराज, ओ महाराज, तेरे माथे मुकुट विराज रहेओ। गिरिराज धारण प्रभु तेरी शरण।



श्री सत्यनारायणजी की आरती

ॐ जय लक्ष्मीरमणा स्वामी जय लक्ष्मीरमणा | सत्यनारायण स्वामी ,जन पातक हरणा || जय लक्ष्मीरमणा

रत्नजडित सिंहासन , अद्भुत छवि राजें | नारद करत निरतंर घंटा ध्वनी बाजें ॥ ॐ जय लक्ष्मीरमणा स्वामी....

प्रकट भयें कलिकारण ,द्विज को दरस दियो | बूढों ब्राम्हण बनके ,कंचन महल कियों ॥ ॐ जय लक्ष्मीरमणा स्वामी....

दुर्बल भील कठार, जिन पर कृपा करी | च्रंदचूड एक राजा तिनकी विपत्ति हरी ॥



श्री खाटू श्याम जी की आरती

ॐ जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे। खाटू धाम विराजत, अनुपम रूप धरे॥ ॐ

रतन जड़ित सिंहासन, सिर पर चंवर दुरे। तन केसरिया बागो, कुण्डल श्रवण पड़े॥ ॐ

गल पुष्पों की माला, सिर पार मुकुट धरे। खेवत धूप अग्नि पर दीपक ज्योति जले॥ ॐ

मोदक खीर चूरमा, सुवरण थाल भरे। सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे॥ ॐ



भगवान शिव की आरती

जय शिव ओंकारा ॐ जय शिव ओंकारा। ब्रह्मा विष्णु सदा शिव अर्द्धांगी धारा॥ ॐ जय शिव…॥

एकानन चतुरानन पंचानन राजे। हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे॥ ॐ जय शिव…॥

दो भुज चार चतुर्भुज दस भुज अति सोहे। त्रिगुण रूपनिरखता त्रिभुवन जन मोहे॥ ॐ जय शिव...॥

अक्षमाला बनमाला रुण्डमाला धारी। चंदन मृगमद सोहै भाले शशिधारी॥ ॐ जय शिव…॥



श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे। सनकादिक गरुणादिक भूतादिक संगे॥ ॐ जय शिव…॥

कर के मध्य कमंडलु चक्र त्रिशूल धर्ता। जगकर्ता जगभर्ता जगसंहारकर्ता॥ ॐ जय शिव…॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका। प्रणवाक्षर मध्ये ये तीनों एका॥ ॐ जय शिव…॥

काशी में विश्वनाथ विराजत नन्दी ब्रह्मचारी। नित उठि भोग लगावत महिमा अति भारी॥ ॐ जय शिव...॥



त्रिगुण शिवजीकी आरती जो कोई नर गावे। कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे॥ ॐ जय शिव...॥

जय शिव ओंकारा हर ॐ शिव ओंकारा।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अद्धांगी धारा॥ ॐ जय शिव ओंकारा...॥



साईबाबा आरती

ॐ जय साईं हरे, बाबा शिरडी साईं हरे। भक्तजनों के कारण, उनके कष्ट निवारण॥ शिरडी में अव-तरे, ॐ जय साईं हरे।

ॐ जय साईं हरे, बाबा शिरडी साईं हरे॥

दुखियन के सब कष्टन काजे, शिरडी में प्रभु आप विराजे। फूलों की गल माला राजे, कफनी, शैला सुन्दर साजे॥ कारज सब के करें, ॐ जय साईं हरे। काकड़ आरत भक्तन गावें, गुरु शयन को चावड़ी जावें। सब रोगों को उदी भगावे, गुरु फकीरा हमको भावे॥



भक्तन भक्ति करें, ॐ जय साईं हरे।

हिन्दु मुस्लिम सिक्ख इसाईं, बौद्ध जैन सब भाई भाई। रक्षा करते बाबा साईं, शरण गहे जब द्वारिकामाई॥ अविरल धूनि जरे, ॐ जय साईं हरे।

भक्तों में प्रिय शामा भावे, हेमडजी से चरित लिखावे। गुरुवार की संध्या आवे, शिव, साईं के दोहे गावे॥ अंखियन प्रेम झरे, ॐ जय साईं हरे।

> ॐ जय साईं हरे, बाबा शिरडी साईं हरे॥ ॐ जय साईं हरे, बाबा शिरडी साईं हरे। शिरडी साईं हरे, बाबा ॐ जय साईं हरे॥



अम्बे जी की आरती

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी। तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी॥ जय अम्बे गौरी

माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को। उज्जवल से दोउ नैना, चन्द्रवदन नीको॥ जय अम्बे गौरी

कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै। रक्तपुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै॥ जय अम्बे गौरी

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्परधारी। सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी॥ जय अम्बे गौरी



कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती। कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योति॥

जय अम्बे गौरी

शुम्भ-निशुम्भ बिदारे, महिषासुर घाती। धूम्र विलोचन नैना, निशिदिन मदमाती॥ जय अम्बे गौरी

चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे। मधु-कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे॥ जय अम्बे गौरी

ब्रहमाणी रुद्राणी तुम कमला रानी। आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी॥ जय अम्बे गौरी



चौंसठ योगिनी मंगल गावत, नृत्य करत भैरूँ। बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरु॥ जय अम्बे गौरी

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता। भक्तन की दुःख हरता, सुख सम्पत्ति करता॥ जय अम्बे गौरी

भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी। मनवान्छित फल पावत, सेवत नर-नारी॥ जय अम्बे गौरी

कन्चन थाल विराजत, अगर कपूर बाती। श्रीमालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति॥ जय अम्बे गौरी

श्री अम्बेजी की आरती, जो कोई नर गावै। कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावै॥ जय अम्बे गौरी



करवा चौथ व्रत

ऊँ जय करवा मइया, माता जय करवा मइया । जो व्रत करे तुम्हारा, पार करो नइया ।। ऊँ जय करवा मइया।

सब जग की हो माता, तुम हो रुद्राणी। यश तुम्हारा गावत, जग के सब प्राणी ।। ऊँ जय करवा मइया।

कार्तिक कृष्ण चतुर्थी, जो नारी व्रत करती। दीर्घायु पति होवे , दुख सारे हरती ।। ऊँ जय करवा मइया।

होए सुहागिन नारी, सुख सम्पत्ति पावे। गणपति जी बड़े दयालु, विघ्न सभी नाशे।। ऊँ जय करवा मइया।

करवा मइया की आरती, व्रत कर जो गावे। व्रत हो जाता पूरन, सब विधि सुख पावे।। ऊँ जय करवा मइया।



छठ मईया की आरती

जय छठी मईया ऊ जे केरवा जे फरेला खबद से, ओह पर सुगा मेड़राए। मारबो रे सुगवा धनुख से, सुगा गिरे मुरझाए॥जय॥

ऊ जे सुगनी जे रोएली वियोग से, आदित होई ना सहाय। ऊ जे नारियर जे फरेला खबद से, ओह पर सुगा मेड़राए॥ जय॥

मारबो रे सुगवा धनुख से, सुगा गिरे मुरझाए। ऊ जे सुगनी जे रोएली वियोग से, आदित होई ना सहाय॥ जय॥

अमरुदवा जे फरेला खबद से, ओह पर सुगा मेड़राए। मां लक्ष्मी का आर्शीवाद मारबो रे सुगवा धनुख से, सुगा गिरे मुरझाए॥जय॥



ऊ जे सुगनी जे रोएली वियोग से, आदित होई ना सहाय। शरीफवा जे फरेला खबद से, ओह पर सुगा मेड़राए॥जय॥

मारबो रे सुगवा धनुख से, सुगा गिरे मुरझाए। ऊ जे सुगनी जे रोएली वियोग से, आदित होई ना सहाय॥ जय॥

ऊ जे सेववा जे फरेला खबद से, ओह पर सुगा मेड़राए। मारबो रे सुगवा धनुख से, सुगा गिरे मुरझाए॥जय॥

ऊ जे सुगनी जे रोएली वियोग से, आदित होई ना सहाय। सभे फलवा जे फरेला खबद से, ओह पर सुगा मेड़राए॥ जय॥

मारबो रे सुगवा धनुख से, सुगा गिरे मुरझाए। ऊ जे सुगनी जे रोएली वियोग से, आदित होई ना सहाय॥ जय॥



श्री सन्तोषी माता जी की आरती

जय संतोषी माता मैया जय संतोषी माता। अपने सेवक जन को सुख सम्पत्ति दाता॥

सुन्दर चीर सुनहरी माँ, धारण कीन्हों। हीरा पन्ना दमके, तन श्रंगार लीन्हों॥

गेरु लाल घटा छवि, बदन कमल सोहे। मन्द हँसत करुणामयी, त्रिभुवन मन मोहे॥

स्वर्ण सिंहासन बैठी, चँवर दूरे प्यारे। धुप, दीप, मधुमेवा, भोग धरे न्यारे॥

गुड़ अरु चना परम प्रिय, तामे संतोष कियो। संतोषी कहलाई, भक्तन वैभव दियो॥



गुड़ अरु चना परम प्रिय, तामे संतोष कियो। संतोषी कहलाई, भक्तन वैभव दियो॥

शुक्रवार प्रिय मानत, आज दिवस सोही। भक्त मण्डली छाई, कथा सुनत मोही॥

मन्दिर जगमग ज्योति, मंगल ध्वनि छाई। विनय करें हम बालक, चरनन सिर नाई॥

भक्ति भावमय पूजा अंगीकृत कीजै। जो मन बसै हमारे, इच्छा फल दीजै॥

दुखी, दरिद्री, रोगी, संकट मुक्त किए। बहु धन - धान्य भरे घर, सुख सौभाग्य दिए॥

ध्यान धर्यो जो नर तेरो, मनवांछित फल पायो। पूजा कथा श्रवणकर, घर आंनद आयो॥



शरण गहे की लज्जा, राखियो जगदम्बे। संकट तू ही निवारे, दयामयी अम्बे॥

संतोषी माँ की आरती, जो कोई नर गावे। ऋद्धि - सिद्धि सुख - सम्पत्ति, जी भर के पावे॥



श्री लक्ष्मी जी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता। तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु विधाता॥ जय

ब्रह्माणी रूद्राणी कमला, तू हि है जगमाता। सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥ जय

दुर्गा रूप निरंजन, सुख सम्पति दाता। जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि सिद्धि धन पाता॥ जय

तू ही है पाताल बसन्ती, तू ही है शुभ दाता। कर्म प्रभाव प्रकाशक, भवनिधि से त्राता॥ जय

जिस घर थारो वासो, तेहि में गुण आता। कर न सके सोई कर ले, मन नहिं धड़काता॥ जय



तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र न कोई पाता। खान पान को वैभव, सब तुमसे आता॥ जय

शुभ गुण सुंदर मुक्ता, क्षीर निधि जाता।

रत्त्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नही पाता॥ जय

आरती लक्ष्मी जी की, जो कोई नर गाता। उर आनन्द अति उपजे, पाप उतर जाता॥ जय

स्थिर चर जगत बचावे, शुभ कर्म नर लाता। राम प्रताप मैया की शुभ दृष्टि चाहता॥ जय



श्री ललिता जी की आरती

श्री मातेश्वरी जय त्रिपुरेश्वरी । राजेश्वरी जय नमो नमः ॥

करुणामयी सकल अघ हारिणी । अमृत वर्षिणी नमो नमः ॥

जय शरणं वरणं नमो नमः । श्री मातेश्वरी जय त्रिपुरेश्वरी ॥

अशुभ विनाशिनी, सब सुख दायिनी। खल-दल नाशिनी नमो नमः॥

भण्डासुर वधकारिणी जय माँ। करुणा कलिते नमो नम:॥



जय शरणं वरणं नमो नमः । श्री मातेश्वरी जय त्रिपुरेश्वरी ॥

भव भय हारिणी, कष्ट निवारिणी । शरण गति दो नमो नमः ॥

शिव भामिनी साधक मन हारिणी । आदि शक्ति जय नमो नमः ॥

जय शरणं वरणं नमो नमः।



अहोई माता की आरती

जय अहोई माता,जय अहोई माता । तुमको निसदिन ध्यावत,हर विष्णु विधाता ॥ ॥ ॐ जय अहोई माता...॥

ब्रह्माणी, रुद्राणी, कमला,तू ही है जगमाता । सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत,नारद ऋषि गाता ॥ ॥ ॐ जय अहोई माता...॥

माता रूप निरंजन,सुख-सम्पत्ति दाता । जो कोई तुमको ध्यावत,नित मंगल पाता ॥ ॥ ॐ जय अहोई माता…॥

तू ही पाताल बसंती,तू ही है शुभदाता । कर्म-प्रभाव प्रकाशक,जगनिधि से त्राता ॥ ॥ ॐ जय अहोई माता...॥



जिस घर थारो वासा,वाहि में गुण आता । कर न सके सोई कर ले,मन नहीं घबराता ॥ ॥ ॐ जय अहोई माता...॥

तुम बिन सुख न होवे,न कोई पुत्र पाता । खान-पान का वैभव,तुम बिन नहीं आता ॥ ॥ ॐ जय अहोई माता...॥

शुभ गुण सुंदर युक्ता,क्षीर निधि जाता । रतन चतुर्दश तोकू,कोई नहीं पाता ॥



अहोई माता की आरती

जय अहोई माता,जय अहोई माता । तुमको निसदिन ध्यावत,हर विष्णु विधाता ॥ ॥ ॐ जय अहोई माता...॥

ब्रह्माणी, रुद्राणी, कमला,तू ही है जगमाता । सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत,नारद ऋषि गाता ॥ ॥ ॐ जय अहोई माता...॥

माता रूप निरंजन,सुख-सम्पत्ति दाता । जो कोई तुमको ध्यावत,नित मंगल पाता ॥ ॥ ॐ जय अहोई माता…॥

तू ही पाताल बसंती,तू ही है शुभदाता । कर्म-प्रभाव प्रकाशक,जगनिधि से त्राता ॥ ॥ ॐ जय अहोई माता...॥



जिस घर थारो वासा,वाहि में गुण आता । कर न सके सोई कर ले,मन नहीं घबराता ॥ ॥ ॐ जय अहोई माता...॥

तुम बिन सुख न होवे,न कोई पुत्र पाता । खान-पान का वैभव,तुम बिन नहीं आता ॥ ॥ ॐ जय अहोई माता...॥

शुभ गुण सुंदर युक्ता,क्षीर निधि जाता । रतन चतुर्दश तोकू,कोई नहीं पाता ॥

॥ ॐ जय अहोई माता...॥

श्री अहोई माँ की आरती,जो कोई गाता। उर उमंग अति उपजे,पाप उतर जाता॥ ॐ जय अहोई माता, मैया जय अहोई माता।



शैलपुत्री माता की आरती

शैलपुत्री मां बैल सवार। करें देवता जय जयकार॥

शिव शंकर की प्रिय भवानी। तेरी महिमा किसी ने ना जानी॥

पार्वती तू उमा कहलावे। जो तुझे सिमरे सो सुख पावे॥

ऋद्धि-सिद्धि परवान करे तू। दया करे धनवान करे तू॥

सोमवार को शिव संग प्यारी। आरती तेरी जिसने उतारी॥



उसकी सगरी आस पुजा दो। सगरे दुख तकलीफ मिला दो॥

घी का सुंदर दीप जला के। गोला गरी का भोग लगा के॥

श्रद्धा भाव से मंत्र गाएं। प्रेम सहित फिर शीश झुकाएं॥

जय गिरिराज किशोरी अंबे। शिव मुख चंद्र चकोरी अंबे॥

मनोकामना पूर्ण कर दो। भक्त सदा सुख संपत्ति भर दो॥



ब्रह्मचारिणी माता की आरती

जय अंबे ब्रह्मचारिणी माता। जय चतुरानन प्रिय सुख दाता॥

ब्रह्म जी के मन भाती हो। ज्ञान सभी को सिखलाती हो॥

ब्रह्म मंत्र है जाप तुम्हारा। जिसको जपे सकल संसारा॥

जय गायत्री वेद की माता।

जो जन निस दिन तुम्हें ध्याता॥

कमी कोई रहने ना पाए। उसकी विरति रहे ठिकाने॥



जो तेरी महिमा को जाने। रुद्राक्ष की माला ले कर॥

जपे जो मंत्र श्रद्धा दे कर।

आलस छोड़ करे गुणगाना॥

मां तुम उसको सुख पहुंचाना। ब्रह्मचारिणी तेरो नाम। पूर्ण करो सब मेरे काम॥

> भक्त तेरे चरणों का पुजारी। रखना लाज मेरी महतारी॥



चंद्रघंटा माता की आरती

जय मां चंद्रघंटा सुख धाम। पूर्ण कीजो मेरे काम॥

चंद्र समाज तू शीतल दाती। चंद्र तेज किरणों में समाती॥

क्रोध को शांत बनानेवाली। मीठे बोल सिखानेवाली॥

मन की मालक मन भाती हो। चंद्रघंटा तुम वरदाती हो॥

सुंदर भाव को लानेवाली। हर संकट में बचानेवाली॥



हर बुधवार जो तुझे ध्याए। श्रद्धा सहित तो विनय सुनाए॥

मूर्ति चंद्र आकार बनाए। सन्मुख घी की जोत जलाए॥

शीश झुका कहे मन की बाता। पूर्ण आस करो जगतदाता॥

कांचीपुर स्थान तुम्हारा। करनाटिका में मान तुम्हारा॥

नाम तेरा रटूं महारानी। भक्त की रक्षा करो भवानी॥



कूष्मांडा माता की आरती

कूष्मांडा जय जग सुखदानी। मुझ पर दया करो महारानी॥

पिंगला ज्वालामुखी निराली। शाकंबरी मां भोलीभाली॥

लाखों नाम निराले तेरे। भक्त कई मतवाले तेरे॥

भीमा पर्वत पर है डेरा। स्वीकारो प्रणाम ये मेरा॥

सबकी सुनती हो जगदंबे। सुख पहुंचाती हो मां अंबे॥



तेरे दर्शन का मैं प्यासा। पूर्ण कर दो मेरी आशा॥

मां के मन में ममता भारी। क्यों ना सुनेगी अरज हमारी॥

तेरे दर पर किया है डेरा। दूर करो मां संकट मेरा॥

मेरे कारज पूरे कर दो। मेरे तुम भंडारे भर दो॥

तेरा दास तुझे ही ध्याए। भक्त तेरे दर शीश झुकाए॥



कूष्मांडा माता की आरती

कूष्मांडा जय जग सुखदानी। मुझ पर दया करो महारानी॥

पिंगला ज्वालामुखी निराली। शाकंबरी मां भोलीभाली॥

लाखों नाम निराले तेरे। भक्त कई मतवाले तेरे॥

भीमा पर्वत पर है डेरा। स्वीकारो प्रणाम ये मेरा॥

सबकी सुनती हो जगदंबे। सुख पहुंचाती हो मां अंबे॥



तेरे दर्शन का मैं प्यासा। पूर्ण कर दो मेरी आशा॥

मां के मन में ममता भारी। क्यों ना सुनेगी अरज हमारी॥

तेरे दर पर किया है डेरा। दूर करो मां संकट मेरा॥

मेरे कारज पूरे कर दो। मेरे तुम भंडारे भर दो॥

तेरा दास तुझे ही ध्याए। भक्त तेरे दर शीश झुकाए॥



स्कंद माता की आरती

जय तेरी हो स्कंद माता। पांचवां नाम तुम्हारा आता॥

सबके मन की जानन हारी। जग जननी सबकी महतारी॥

तेरी जोत जलाता रहूं मैं। हरदम तुझे ध्याता रहूं मैं॥

कई नामों से तुझे पुकारा। मुझे एक है तेरा सहारा॥

कहीं पहाड़ों पर है डेरा।

कई शहरों में तेरा बसेरा॥



हर मंदिर में तेरे नजारे। गुण गाएं तेरे भक्त प्यारे॥

भक्ति अपनी मुझे दिला दो। शक्ति मेरी बिगड़ी बना दो॥

इंद्र आदि देवता मिल सारे। करें पुकार तुम्हारे द्वारे॥

दुष्ट दैत्य जब चढ़ कर आए। तू ही खंडा हाथ उठाए॥

दासों को सदा बचाने आयी। भक्त की आस पुजाने आयी॥



कात्यायनी माता की आरती

जय जय अंबे जय कात्यायनी। जय जगमाता जग की महारानी॥

बैजनाथ स्थान तुम्हारा। वहां वरदाती नाम पुकारा॥

कई नाम हैं कई धाम हैं। यह स्थान भी तो सुखधाम है॥

हर मंदिर में जोत तुम्हारी। कहीं योगेश्वरी महिमा न्यारी॥

हर जगह उत्सव होते रहते। हर मंदिर में भक्त हैं कहते॥



कात्यायनी रक्षक काया की। ग्रंथि काटे मोह माया की॥

झूठे मोह से छुड़ानेवाली। अपना नाम जपानेवाली॥

बृहस्पतिवार को पूजा करियो। ध्यान कात्यायनी का धरियो॥

हर संकट को दूर करेगी। भंडारे भरपूर करेगी॥

जो भी मां को भक्त पुकारे। कात्यायनी सब कष्ट निवारे॥



कालरात्रि माता की आरती

कालरात्रि जय जय महाकाली। काल के मुंह से बचानेवाली॥

दुष्ट संघारक नाम तुम्हारा। महाचंडी तेरा अवतारा॥

पृथ्वी और आकाश पे सारा। महाकाली है तेरा पसारा॥

खड्ग खप्पर रखनेवाली। दुष्टों का लहू चखनेवाली॥

कलकत्ता स्थान तुम्हारा। सब जगह देखूं तेरा नजारा॥

सभी देवता सब नर-नारी।



गावें स्तुति सभी तुम्हारी॥

रक्तदंता और अन्नपूर्णा। कृपा करे तो कोई भी दुख ना॥

ना कोई चिंता रहे बीमारी। ना कोई गम ना संकट भारी॥

उस पर कभी कष्ट ना आवे। महाकाली मां जिसे बचावे॥

तू भी भक्त प्रेम से कह। कालरात्रि मां तेरी जय॥



महागौरी माता की आरती

जय महागौरी जगत की माया। जया उमा भवानी जय महामाया॥

हरिद्वार कनखल के पासा। महागौरी तेरा वहां निवासा॥

चंद्रकली ओर ममता अंबे। जय शक्ति जय जय मां जगदंबे॥

भीमा देवी विमला माता। कौशिकी देवी जग विख्याता॥

हिमाचल के घर गौरी रूप तेरा।

महाकाली दुर्गा है स्वरूप तेरा॥



सती सत हवन कुंड में था जलाया। उसी धुएं ने रूप काली बनाया॥

बना धर्म सिंह जो सवारी में आया। तो शंकर ने त्रिशूल अपना दिखाया॥

तभी मां ने महागौरी नाम पाया। शरण आनेवाले का संकट मिटाया॥

शनिवार को तेरी पूजा जो करता। मां बिगड़ा हुआ काम उसका सुधरता॥

भक्त बोलो तो सोच तुम क्या रहे हो। महागौरी मां तेरी हरदम ही जय हो॥



सिद्धिदात्री माता की आरती

जय सिद्धिदात्री मां तू सिद्धि की दाता। तू भक्तों की रक्षक तू दासों की माता॥

तेरा नाम लेते ही मिलती है सिद्धि। तेरे नाम से मन की होती है शुद्धि॥

कठिन काम सिद्ध करती हो तुम। जभी हाथ सेवक के सिर धरती हो तुम॥

तेरी पूजा में तो ना कोई विधि है। तू जगदंबे दाती तू सर्व सिद्धि है॥

रविवार को तेरा सुमिरन करे जो। तेरी मूर्ति को ही मन में धरे जो॥



तू सब काज उसके करती है पूरे। कभी काम उसके रहे ना अधूरे॥

तुम्हारी दया और तुम्हारी यह माया। रखे जिसके सिर पर मैया अपनी छाया॥

सर्व सिद्धि दाती वह है भाग्यशाली। जो है तेरे दर का ही अंबे सवाली॥

हिमाचल है पर्वत जहां वास तेरा। महा नंदा मंदिर में है वास तेरा॥

मुझे आसरा है तुम्हारा ही माता। भक्ति है सवाली तू जिसकी दाता॥



About Us

Ritualbazaar is a website dedicated to providing puja-related products and services, backed by 45 years family-run offline store at Goregaon West in the name of Jalaram Pooja Articles.

- Our goal is to make the traditional practice of puja easier and more convenient
- We offer a wide range of high-quality puja essentials including religious idols, puja thalis, incense sticks, and sacred books
- Delivery service is reliable and efficient, ensuring timely delivery of puja essentials
- The website also provides valuable resources and information through their blog to enhance the puja experience
- Ritualbazaar aims to bring tranquility, devotion, and peace into people's lives through their puja offerings.



